INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS
VOLUME 2, ISSUE 7, JULY 2014
ISSN-2320-2882
ORIGINAL ARTICLE

राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन

डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव
प्राचार्य
महाराजा सूरजमल टी.टी. कॉलेज,
भरतपुर (राजस्थान)

निधि शर्मा
शोधकर्त्री
पेसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी,
उदयपुर(राजस्थान)

शोध सारांश

भारत को गुलामी की जंजीरों से आजाद हुए 67 वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो चुका है। संविधान की मूल भावना के अनुरूप 6 से 14 वर्ष के सभी बालक बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के स्वप्न को साकार करने से प्रेरित थी। भारत की जनसंख्या का एक महत्त्वपूर्ण भाग कच्ची बस्तियों में निवास करता है। सरकार द्वारा विभिन्न संस्थाओं एवं योजनाओं के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। इन प्रयासों की सफलता अध्यापकों की इन संस्थाओं एवं योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का मापन करके ज्ञात की जा सकती है। प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य हैं– (1) राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण से सम्बन्धित योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना तथा (2) राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना। शोध के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि (1) राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण से सम्बन्धित योजनाओं के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। (2) राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिककरण के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावना

कच्ची बस्ती से सम्बन्धित किसी भी विचार के उत्पन्न होने पर हमारे मस्तिष्क में गन्दे, अस्वास्थ्यवर्धक, कच्चे मकानों में रहने वाले ऐसे लोगों का समूह बिम्बित होता है जो सरकारी नलों पर घण्टों पानी के लिए कतार में खड़े रहते हैं, चारों ओर कच्ची सड़के और गन्दगी के ढेर होते हैं। वे अपने बच्चों को सड़कों के किनारे रखने हेतु मजबूर हैं तथा जिनके बच्चों का अन्तहीन रूदन रोकने में कोई सहायक नहीं होता।

Please cite this Article as : **अनिल कुमार श्रीवास्तव, निधि शर्मा, राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन** : International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.7, July 2014

हाल ही में किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में शहरी क्षेत्रों में कच्ची बस्तियों में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या पूरे विश्व के कुल जनसंख्या का 22 प्रतिशत है। वहीं पूरे विश्व में शहरी कच्ची बस्तियों में निवास करने वालों की जनसंख्या समग्र का 32 प्रतिशत है।

भारत सरकार के शहरी मामलात मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार भारत में सन 2001 से 2011 के मध्य कच्ची बस्तियों में एक कमरे के मकान में रहने वाले परिवारों की संख्या में 4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। साथ ही भारत की शहरी आबादी में से 8.5 करोड़ व्यक्ति निम्न स्तरीय जीवन शैली, असुरक्षित आवास एवं सदैव विस्थापन की आशंका से ग्रस्त रहते हैं। इन कच्ची बस्तियों में रहने वाले बालक–बालिका विभिन्न ऐसी समस्याओं से ग्रसित रहते हैं जो उन्हें प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने से वंचित कर देती है। इन समस्याओं का अध्ययन करने हेतु शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से एक सार्थक प्रयत्न किया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

शोधकर्त्री ने विभिन्न शोध अध्ययनों का अध्ययन किया जिसमें अध्यापकों के विभिन्न विषयों पर विचार एवं अभिवृत्ति का मापन किया गया है। अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन द्वारा ''शिक्षा गारन्टी कार्यक्रम को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करने हेतु किये गये सर्वेक्षण में पाया कि (1) उच्च प्राथमिक विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालयों की अपेक्षा ठहराव दर अधिक पाई जाती है। (2) इस प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों में उद्देश्य तथा लक्ष्य स्पष्ट रूप से सामने रखे जाते हैं तथा प्रभावी रूप से उन्हें प्राप्त करने के प्रयास किये जाते हैं। (3) यह एक प्रकार से शिक्षण के ''नॉलेज कैप्सूल'' के रूप में तकनीकी तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सहायक है। जिनके उचित तथा प्रभावी उपयोग द्वारा सर्वशिक्षा अभियान के लक्ष्यों की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अहलुवालिया, रेशमा टी. (2005) ने गुजरात राज्य में प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समस्याओं पर अध्ययन कार्य किया जिसमें पाया कि प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों को विभिन्न समस्याओं जैसे– अत्यधिक गृहकार्य, शैक्षणिक, शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना करते समय असहज और अकेले महसूस करते है। अध्यापकों को बालकों में इन समस्याओं की पहचान व निराकरण के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व

शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है जो मनुष्य को विकास के पथ पर अग्रसर करती है। मानव जितना अधिक शिक्षित होता है, उतना ही अधिक उसमें जीवन कौशल विकसित होता है। सभ्यता के विकास एवं अभिवृद्धि हेतु शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। भारत में निर्धनता एवं अन्य सामाजिक समस्याओं का प्रमुख कारण अशिक्षा अथवा निम्नतर शैक्षणिक स्थिति है। शिक्षा का सार्वभौमीकरण एक ऐसा सम्प्रत्यय है जो प्रत्येक बालक–बालिका को शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित है किन्तु आजादी के 67 वर्ष पश्चात भी भारत में अनेक ऐसे नागरिक समूह है जिनके बालक–बालिका प्राथमिक शिक्षा से वंचित हैं।

इनमें वे बालक–बालिका भी सम्मिलित हैं जो शहरी क्षेत्र में रहकर भी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से दूर हैं। ये नागरिक समूह कच्ची बस्तियों में निवास करते हैं एवं जीवनयापन हेतु प्रतिक्षण युद्धरत रहते हैं। यह युद्ध पेट भरने के लिए परिस्थितियों के विरूद्ध होता है। इन बालक–बालिकाओं के समक्ष ऐसी अनेक समस्याएं हैं। जिनके कारण वे चाह कर भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से कच्ची बस्तियों में रहने वाले बालक–बालिकाओं की समस्याओं का अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य के परिणाम निश्चित रूप से नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं शैक्षिक प्रशासकों हेतु मार्ग–दर्शक सिद्ध होंगे।

शोध के उद्देश्य

1. राजस्थान राज्य में कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने राजस्थान राज्य के भरतपुर, धौलपुर, सवाई माधोपुर तथा करौली जिले की कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों का चयन किया है। जिसमें बालक–बालिकाओं की संख्या समान हैं।

उपकरण

शोधकर्त्री ने शोध कार्य हेतु दत्त संकलन के लिए स्वनिर्मित उपकरण ''विद्यार्थी समस्या मापनी'' का प्रयोग किया है।

क्रिया विधि

सर्वप्रथम उक्त उपकरण कच्ची बस्तियों में स्थित विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को दिया गया। इस हेतु शोधकर्त्री ने स्वयं संस्थाप्रधान से सम्पर्क कर शोध के उद्देश्य का विवरण प्रस्तुत किया एवं सहयोग का आग्रह किया। संस्थाप्रधान की अनुमति प्राप्त कर विद्यार्थियों को समझाया गया कि उपकरण में दो विकल्प हैं जिनके आधार पर वे अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं। इस हेतु उन्हें प्रत्येक कथन पर अपनी पसन्द के विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाना है।

सांख्यिकी

उपकरण के माध्यम से संग्रहित किये गये प्रदत्तों का सारणीय किया गया तत्पश्चात माध्य, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का उपयोग प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (x)	मानक विचलन (S.D.)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
छात्र	300	39.40	9.66	0.34	दोनों स्तर पर असार्थक
छात्राएं	300	39.66	9.24		

0.05 स्तर पर टी का मान = 1.96 स्वतंत्रता अंश = 598
0.01 स्तर पर टी का मान = 2.58

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि राजस्थान राज्य की कच्ची बस्तियों में स्थित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

राजस्थान राज्य की कच्ची बस्तियों में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शारीरिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं, आर्थिक एवं अभावग्रस्तता सम्बन्धी समस्याओं, सामाजिक समस्याओं, मनोवैज्ञानिक समस्याओं, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं, पारिवारिक समस्याओं, भविष्य से सम्बन्धित समस्याओं, शैक्षणिक समस्याओं, समायोजन सम्बन्धी समस्याओं एवं विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अग्निहोत्री, रवीन्द्र : ''आधुनिक भारतीय शिक्षा : समस्याएँ और समाधान'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008
2. बेस्ट, जॉन, डब्ल्यू : ''रिसर्च इन एजूकेशन'' प्रेन्टिस हॉल प्रा. लि, नई दिल्ली, 1973
3. राय, पारसनाथ : ''अनुसंधान परिचय'', लक्ष्मीनारायण, आगरा, 1995
4. वार्षिक रिर्पोट : मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली (2008–09), (09–10)
5. राजस्थान सरकार : शिक्षा की परिस्थितियों पर वार्षिक रिपोर्ट राजस्थान, जून–2008